|  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| **ATOMIC ENERGY CENTRAL SCHOOL, \_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_** | | | | | |
| **WORKSHEET-CYCLE \_\_\_\_\_\_** | | | | | |
| **SUBJECT-HINDI** | |  |  |  | **CLASS-11** |
| **LESSON- गलता लोहा** | | | | | **MODULE-2** |
| **NAME OF THE STUDENT** | |  | | | |
| **ROLL NO.** |  | |  | **DATE:** |  |
| **MAX MARKS:** |  | | **MARKS OBTAINED** | |  |

**(1)गद्यांश पढ़कर दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 2x5=10**

औसत दफ़्तरी बड़े बाबू की हैसियत वाले रमेश के लिए मोहन को अपना भाई-बिरादर बतलाना अपने सम्मान के विरुद्ध जान पड़ता था और उसे घरेलू नौकर से अधिक हैसियत वह नहीं देता था,इस बात को मोहन भी समझने लगा था। थोड़ी-बहुत हीला-हवाली करने के बाद रमेश ने निकट के ही एक साधारण से स्कूल में उसका नाम लिखवा दिया। लेकिन एकदम नए वातावरण और रात-दिन के काम के बोझ के कारण गाँव का वह मेधावी छात्र शहर के स्कूली जीवन में अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। उसका जीवन एक बँधी-बँधाई लीक पर चलता रहा। साल में एक बार गरमियों की छुट्टी ममें गाँव जाने का मौका भी मिलता जब रमेश या उसके घर का कोई प्राणी गाँव जाने वाले होता वरना उन छुट्टियों को भी अगले दरजे की तैयारी के नाम पर उसे शहर में ही गुजार देना पड़ता था। अगले दरजे की तैयारी तो बहाना भर थी, सवाल रमेश और उसकी गृहस्थी की सुविधा-असुविधा का था। मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था क्योंकि और कोई चारा भी नहीं था। घरवालों को अपनी वास्तविक स्थिति बतलाकर वह दुखी नहीं करना चाहता था। वंशीधर उसके सुनहले भविष्य के सपने देख रहे थे।

(क) कहानी तथा उसके लेखक का नाम लिखिए।

(ख) रमेश की नज़रों में मोहन की कीमत क्या थी?

(ग) मेधावी मोहन विद्यालय में अपनी पहचान क्यों नहीं बना पाया ?

(घ) गर्मियों की छुट्टियों में भी मोहन अपने गाँव क्यों नहीं जा पाता था?

(ड.) मोहन ने अपनी परिस्थितियों से समझौता क्यों कर लिया था?

**(2) गद्यांश पढ़कर दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 2x3=6**

मोहन का यह हस्तक्षेप इतनी फुर्ती से और आकस्मिक ढंग से हुआ था कि धनराम को चूक का मौका ही नहीं मिला। वह अवाक मोहन की ओर देखता रहा। उसे मोहन की कारीगरी पर उतना आश्चर्य नहीं हुआ जितना पुरोहित खानदान के एक युवक का इस तरह के काम में, उसकी भट्ठी पर बैठकर ,हाथ डालने पर हुआ था। वह शंकित दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा।

धनराम की संकोच,असमंजस और धर्म-संकट की स्थिति से उदासीन मोहन संतुष्ट भाव से अपने लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई को जांच रहा था। उसने धनराम की ओर अपनी कारीगरी की स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी-जिसमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार-जीत का भाव।

(क) मोहन ने लोहा ढालने की कारीगरी कैसे सीखिए होगी?

(ख) धनरम को किस बात पर आश्चर्य हुआ?

(ग) लोहे के गोले को ढालने के बाद मोहन की मनःस्थिति कैसी थी?